सतत विकास पर रेडियो धारावाहिक # 20

एपिसोड शीर्षक : कल के लिए सहेजें जल

अवधिः 27 मिनट

समन्वयकः श्री बी.के. त्यागी **स्क्रिप्टः श्रीनिवास ओली**

पात्र परिचय

1. सुमित – बीटेक का छात्र
2. आंचल – दसवीं की छात्रा / सुमित की बहन
3. दिनेश – आंचल / सुमित के पिता (45 वर्ष)
4. डॉ इरफान – कॉलेज प्रोफेसर (45 वर्ष)
5. बंशीधर – राजस्थानी ग्रामीण वृद्ध (65 वर्ष) (राजस्थानी लहजे में बात)
6. गोदावरी – उत्तराखंड की ग्रामीण महिला (45 वर्ष) (पहाड़ी लहजे में बात)

SIGNATURE TUNE ..... FADE OUT

उद्घोषक: (*Welcome + Recap + Intro*) रेडियो विज्ञान धारावाहिक ..... में आपका स्वागत है। आज के एपिसोड में हम बात करेंगे पानी के विभिन्न स्रोत और उनके संरक्षण के बारे में। आखिर कहां से आता है ये पानी.... और जब इतना सारा पानी हमें नजर आता है तो फिर इसे बचाने की चिंता क्यों ? कुछ ऐसे ही सवालों के साथ सुमित छुट्टियों में अपने कस्बे में पहुंचा है। क्या सुमित को अपने सवालों के जवाब मिले ? जानने के लिए चलते हैं सुमित के पास।

---------- SIGNATURE TUNE----------

SCENE ONE

(चिड़िया चहचहाने की आवाज़ / कुएं में बर्तन डुबोकर पानी निकालने की आवाज़ / धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई)

आंचल : भैया, आप तो कह रहे थे कि पूरी दुनिया में पानी की काफी किल्लत होने लगी है। देखो ना, हमारे कुएं में अब भी कितना सारा पानी है।

(लोहे की बाल्टी की जमीन पर रखने की आवाज़)

सुमित : **(हल्की हंसी के साथ)** ठीक है, आंचल। अभी तुम्हें ऐसा लग रहा है। हमारे गांव में भले ही अभी ऐसी स्थिति नहीं आई है लेकिन हर जगह ऐसा नहीं है।

आंचल : हमारे गांव में तो ना पीने के पानी की दिक्कत है और ना ही सिंचाई के लिए पानी की कमी।

सुमित : वो तो है। देखो आंचल, पिताजी भी यहीं को आ रहे हैं। शायद हम लोगों ने पानी देखने में कुछ ज्यादा ही देर कर दी।

(कदमों की आवाज़ करीब आती हुई)

दिनेश : क्या बात है ? आप लोगों ने कुंए में ही काफी देर कर दी। चलो, अब घर को चलो।

(पार्श्व में कदमों की आवाज / लगातार)

दिनेश : सुमित, तो तुमने देख लिया ना, कि हमारे कुएं में अब भी काफी पानी है।

सुमित : हां पापाजी। यहां तो अभी कोई दिक्कत नहीं है। हमारे कॉलेज के हॉस्टल में तो पानी की बहुत मारामारी रहती है। गर्मियों में तो हालत बहुत ही खराब हो जाती है।

आंचल : लेकिन भैया। आप तो बता रहे थे कि आपके कॉलेज के पास से ही एक नदी गुजरती है। फिर भला पानी के लिए मारामारी क्यों ?

सुमित : अरे आंचल। तुम एक बार उस नदी को देख लोगी तो फिर ऐसा नहीं कहोगी। उसका पानी तो पीने के लिए तो दूर, नहाने के काम भी नहीं आ सकता।

आंचल : मतलब ?

सुमित : मतलब ये कि वो बेहद गंदा है। रंग ऐसा मानो कीचड़ बह रही हो।

आंचल : अरे, ऐसा क्यों ?

सुमित : ऐसा इसलिये, क्योंकि वो नदी कई सारे कस्बों और शहरों से होकर वहां पहुंचती है। और इस दौरान शहरों की गंदगी, कल-कारखानों का कचरा, सभी कुछ उसमें ही गिरता रहता है। अब तुम्हीं बताओ। ऐसे पानी को क्या तुम पी सकती हो ?

आंचल : ना भैया ना। लेकिन ऐसे में शहरों में पीने का पानी आखिर कहां से आता है ?

सुमित : अलग-अलग जगहों पर अलग तरह के इंतजाम हैं। और ऐसा भी नहीं कि देश की सभी नदियों की यही स्थिति है।

(मोबाइल फोन की घंटी बजने की आवाज़)

दिनेश : हेलो.... नमस्ते डॉक्टर साहब।.... जी.. हां.. जी...। जरूर आइएगा। नहीं.. नहीं.. हम लोग घर पर ही मिलेंगे। ठीक है – ठीक है। शाम को होगी मुलाकात। जरूर... अच्छा.. नमस्ते।

आंचल : किसका फोन था पापाजी।

दिनेश : वो डॉक्टर इरफान हैं ना। यहीं कस्बे के डिग्री कॉलेज में प्रोफेसर हैं।

सुमित : हां.. हां..। वो तो आपके दोस्त हैं ना ?

दिनेश : हां सुमित। उन्हीं का फोन था। काफी दिनों से मुलाकात नहीं हुई है। कह रहे थे कि आज शाम को यहीं आएंगे.. सैर के लिए।

सुमित : ये तो बहुत अच्छी बात है। आंचल, तुम्हारे कई सवालों का बेहतर जवाब भी वो आसानी से दे देंगे।

दिनेश : वो तो ठीक है.. लेकिन अभी तो अपनी चाल कुछ तेज करो। घर पहुंचकर दोपहर का खाना भी बनाना है....।

आंचल : पापाजी, शायद आज आपको पता चलेगा कि मम्मी घर में कितना काम करती हैं।

दिनेश : तो तुम्हारा मतलब है कि मैं दिनभर ऑफिस में खाली ही बैठे रहता हूं ?

आंचल : **(हंसते हुए)** नहीं.. नहीं... मेरे कहने का मतलब है ये कि आज आपको रसोई में भी अपना हुनर दिखाने का मौका मिल जाएगा।

(तीनों की हंसी / कदमों की आवाज़ धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई)

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

SCENE TWO

(टीवी पर क्रिकेट मैच चल रहा है / मैच का शोर सुनाई देता है / दरवाजे की घंटी बजने की आवाज़)

दिनेश : सुमित, टीवी का वॉल्यूम कम करो। शायद बाहर कोई हैं।

(दरवाजे की घंटी बजने की आवाज़ फिर से आती है)

आंचल : पापाजी, आपके दोस्त हैं शायद। प्रोफेसर इरफान।

(दरवाजा खुलने की आवाज़)

सुमित व आंचल : नमस्ते अंकल। आइये... आइये।

इरफान : नमस्ते बच्चो... कैसे हो...।

दिनेश : आइये डॉक्टर साहब... आइये। बैठिये।

इरफान : छुट्टी में क्रिकेट का आनंद लिया जा रहा है।

दिनेश : अरे बस, यूं ही। पिछले मैच की हाइलाइट्स देख रहे थे।

(टीवी की आवाज़ धीरे-धीरे बंद हो जाती है)

इरफान : मैंने सोचा कि कई दिनों से आपके मुलाकात नहीं हुई थी। सोचा थौड़ी सैर भी हो जाएगी और मुलाकात भी।

दिनेश : काफी अच्छा किया आपने। मुझे भी बाकी दिनों तो ऑफिस के काम से ही फुर्सत नहीं मिलती। फिर यहां से ऑफिस आने-जाने में भी काफी वक्त निकल जाता है। बच्चे भी आपका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।

इरफान : मेरा इंतजार ? वो भला क्यों ?

दिनेश : डॉक्टर साहब, आपको तो मालूम ही है कि सुमित बीटेक कर रहा है।

इरफान : हां... हां।

दिनेश : उसकी कुछ दिन की छुट्टियां थीं। इसीलिये वो आजकल घर पर है। आज सुबह सुमित और आंचल पानी के बारे में बातचीत कर रहे थे। मैंने कहा कि अपने सवालों को डॉक्टर इरफान के सामने रखोगे तो ज्यादा ठीक रहेगा।

इरफान : **(हल्की हंसी के साथ)** अच्छा ... अच्छा। ये तो बहुत अच्छी बात है कि बच्चों की इस बारे में अभी से दिलचस्पी हो रही है। बोलो बच्चो.... क्या हैं तुम्हारे सवाल।

आंचल : अंकल, भैया बता रहे थे कि उनके कॉलेज के पास की नदी का पानी पीने लायक नहीं है। मैं सोच रही हूं कि वहां के लोग अपने के लिए पानी का इंतजाम भला कैसे करते होंगे।

इरफान : देखो बेटी, इसका छोटा सा जवाब तो ये है कि गंदे पानी को कई तरह से साफ कर इस्तेमाल के लायक बनाया जा सकता है।

आंचल : और बड़ा जवाब ?

इरफान : **(हल्की हंसी के साथ)** इसके लिए तो तुम्हें कुछ तसल्ली रखनी होगी। सबसे पहले तो हमें ये समझना होगा कि दुनिया में पानी हमें कहां-कहां से मिलता है। यानी पानी के स्रोत क्या क्या हैं।

आंचल : सबसे बड़ा स्रोत तो समुद्र ही हुआ ना ?

सुमित : **(कुछ तल्खी के साथ)** पहले पूरी बात तो सुन लिया करो आंचल।

इरफान : समुद्र भले ही पानी का सबसे बड़ा भंडार हो, लेकिन रोजमर्रा की जिंदगी में उसका हम कितना इस्तेमाल करते हैं, ये तुम्हें अच्छी तरह से पता है।

आंचल : हां अंकल, सही कहा, उस खारे पानी का हमारे लिए भला क्या उपयोग।

इरफान : देखो, जल स्रोतों को हम मोटे तौर पर दो भागों में बांट सकते हैं। एक तो धरती की उपरी सतह पर बहने वाले स्रोत और दूसरा धरती के अंदर से उपजे पानी के स्रोत... यानी भूमिगत स्रोत।

सुमित : अंकल, बारिश भी तो पानी का एक बड़ा स्रोत है ना ?

इरफान : बिल्कुल सही कहा तुमने। बारिश भी एक बड़ा स्रोत है... और ये पानी का ऐसा स्रोत है जो धरती के दूसरे स्रोतों को भी जीवन देता है। भूमिगत जल स्रोतों को बनाए रखने में भी वर्षाजल की बड़ी भूमिका है। हमें ये बात याद रखनी चाहिए कि भारत में उन इलाकों में अपेक्षाकृत ज्यादा जल संसाधन हैं जहां साल में औसतन सौ सेंटीमीटर बारिश होती है।

सुमित : तो अंकल, जलस्रोतों को हम यूं समझ लें कि एक तो वो जिनमें पानी हमें बाहर बहते हुए नजर आता है... और दूसरे वो जिनमें धरती के अंदर से पानी निकल रहा होता है।

इरफान : बिल्कुल... और मौजूदा वक्त में करीब सत्तर फीसदी लोगों की पानी की जरूरत इसी भूमिगत जल से पूरी होती है। इस तरह से मुख्य जलस्रोतों में हिमालय के ग्लेशियरों से निकलने वाली और दूसरी मौसमी नदियां, छोटी-छोटी पर्वतीय जलधाराएं, बड़ी झीलें, तालाब, जोहड़, बावड़ी, कुएं और नलकूप शामिल हैं।

आंचल : फिर तो हमारे पास काफी सारा पानी हुआ ना ?

इरफान : ऐसी बात नहीं है आंचल। दुनिया के करीब सोलह फीसदी लोग हमारे देश में रहते हैं लेकिन हमारे पास दुनियाभर के जल संसाधनों का महज चार फीसदी हिस्सा ही है।

दिनेश : आबादी के दबाव का असर हमारे जलस्रोतों पर साफ नजर दिखाई देता है। आप देखिये कि हिमालयी नदियां पर्वतीय क्षेत्र में तो साफ-सुथरी रहती हैं लेकिन मैदानी इलाकों में आते-आते उनका पानी खराब होता चला जाता है।

आंचल : आखिर इसकी वजह क्या है अंकल

इरफान : मैदानी इलाकों में घनी आबादी की घरेलू गंदगी, उद्योगों का कचरा सब कुछ तो नदियों में ही समाता है। उसका असर तो नदी की सेहत पर पड़ेगा ही ना।

सुमित : ये तो बड़ी चिंता की बात है।

इरफान : बिल्कुल कही कहा। बेलगाम विकास की दौड़ में हम लोग ये भूलते जा रहे हैं कि आखिर कुदरत को संजोने की जिम्मेदारी भी तो हमारी ही है।

दिनेश : सही बात, आखिर कुदरत के संसाधनों का इस्तेमाल करने की कोई सीमा भी तो हो !

इरफान : प्रतिव्यक्ति पानी की घटती उपलब्धता और बढ़ती मांग की वजह से जलस्रोतों पर दबाव बढ़ा है। जलस्रोतों को प्रदूषण से बचाकर, बारिश के पानी को इकट्ठा करके, बेकार पानी को फिर से उपयोग के लायक बनाकर हम पानी के संकट को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

दिनेश : हमारे देश में भौगोलिक लिहाज से काफी विविधता है। इसी कारण अलग-अलग जगह पर अलग किस्म से जलस्रोत नजर आते हैं। जिस तरह के जलस्रोतों का इस्तेमाल हम मैदान के तराई इलाकों में करते हैं वैसा पहाड़ी इलाकों में नहीं होता। और राजस्थान के एकदम पश्चिमी क्षेत्र में तो और भी ज्यादा अंतर नजर आता है।

इरफान : राजस्थान के जिक्र से एक बात का ध्यान आया। सुमित, तुम्हारी तो कल भी छुट्टी ही है ना ?

सुमित : जी अंकल।

आंचल : और मेरी भी छुट्टी है।

इरफान : तो आप लोग कल हमारे कॉलेज में जल महोत्सव देखने आ सकते हो।

सुमित : जल महोत्सव !

इरफान : हां सुमित। कॉलेज के कैंपस में तीन दिन का जल महोत्सव चल रहा है। इस मेले में देश के कई हिस्सों से लोग अपने स्टॉल लेकर पहुंचे हुए हैं। इनके जरिये वो अपने इलाकों के जल संसाधनों और जल संरक्षण के पारंपरिक तरीकों की जानकारी लोगों तक पहुंचा रहे हैं।

सुमित : ये तो बहुत अच्छी बात है। हम दोनों ही कल वहां जरूर जाएंगे।

दिनेश : ऑफिस से छुट्टी के बाद मैं भी वहां पहुंच जाऊंगा। मुझे भी कुछ नया सीखने को मिल जाए तो क्या बुरा है ?

इरफान : ये तो अच्छी बात है। शाम को फुर्सत मिली तो मैं भी एक बार जरूर आऊंगा। शायद वहीं मुलाकात हो जाए। लेकिन फिलहाल में चलता हूं।

दिनेश : अभी बैठिये ना कुछ देर और ...

इरफान : नहीं... नहीं... मैं अभी चलता हूं। शायद कल फिर मुलाकात होगी।

दिनेश : ठीक है... आराम से जाइएगा.. नमस्ते।

सुमित और आंचल : बाय अंकल...

इरफान : बाय बेटा.... कल मिलेंगे।

----------SCENE TRANSITION MUSIC----------

SCENE THREE

(जल महोत्सव में भीड़भाड़ / कई स्टॉल लगे हैं / मिलीजुली आवाज़ें आ रही हैं / आंचल और सुमित चलते-चलते बातचीत करते हैं)

आंचल : भैया, वाह.... ये तो बहुत अच्छी जगह आ गये हम। द

सुमित : हां आंचल। देखो ना कितने सारे स्टॉल लगे हुए हैं। वो देखो उधर... छोटी सी नदी का कितना खूबसूरत मॉडल बनाया हुआ है।

आंचल : हां, जरा वहां तो देखो भैया। कुएं पर पानी भरती हुई महिला.... है तो मिट्टी की... लेकिन लगता है, बस अभी बोल उठेगी।

सुमित : आंचल, यहां तो देखने के लिए इतनी सारी चीजें हैं.... देखो वो सामने... राजस्थान का स्टॉल है। चलो अभी वहीं चलते हैं।

आंचल : हां... हां भैया चलो, चलते हैं।

(चलने की आवाज़ / राजस्थानी लोकधुन... धीरे-धीरे करीब आती हुई)

सुमित : वाह... यहां तो राजस्थान के पारंपरिक जलस्रोतों के कितने सुंदर मॉडल रखे हुए हैं।

आंचल : भैया, वहां पर चलो, बड़ी सी पगड़ी पहने हुए वो बुजर्ग बैठे हैं। उनसे बातें करते हैं।

सुमित : नमस्त बाबा, कैसे हैं आप।

बंशीधर : मैं ठीक हूं बच्चो।

सुमित : बाबा, मैं सुमित हूं और ये है मेरी बहन आंचल। हम लोग आपके राजस्थान के जलस्रोतों के बारे में कुछ जानना चाहता हूं।

बंशीधर : आओ बच्चो, बैठो। ये तो बहुत अच्छी बात है।

आंचल : बाबा, राजस्थान में पानी के कौन-कौन से स्रोत हैं।

बंशीधर : देखो बेटी, आपको ये तो पता ही है कि राजस्थान में बारिश भी कम होती है और यहां सदाबहार नदियां भी कम ही हैं। खासतौर से पश्चिमी राजस्थान में तो पानी की बेहद किल्लत रहती है। ऐसे में हम लोगों के लिए ये जरूरी हो गया था कि हमें जितना भी पानी मिले उसे हम सहेज कर रखें।

आंचल : तो इसके लिए क्या किया गया।

बंशीधर : राजस्थान में काफी पुराने वक्त से ही तालाबों का निर्माण होता रहा। इन तालाबों में बारिश के पानी को जमा किया जाता था और समाज के लोग ही इन तालाबों की देखरेख करते थे। हालांकि अब भी काफी तालाब बचे हुए हैं लेकिन बढ़ती आबादी की वजह से कई तालाब खत्म भी हो गए।

सुमित : बाबा, राजस्थान में तो कई झीलें भी है ना ?

बंशीधर : हां बेटा। पानी के स्रोत और संरक्षण के लिहाज से राजस्थान में झीलों की काफी अहमियत रही है। यहां की कई झीलें तो सैकड़ों साल पुरानी हैं जिन्हें यहां के राजाओं और बड़े बड़े सेठों ने बनवाया। इन झीलों के पानी का इस्तेमाल सिंचाई के लिए भी होता है और कहीं-कहीं पीने के लिए भी होता है।

सुमित : राजस्थान में तो कई सुंदर बावड़ियां भी हैं।

बंशीधर : हां, ज्यादातर बावड़ियां मंदिर या मठों के करीब में बनायी जाती थीं। इसके अलावा छोटे पोखरों में भी बारिश के पानी को जमा किया जाता था, इन्हें नाडी भी कहा जाता है। एक बात बताऊं बच्चों तुमको। इन तालाबों और बावड़ियों ने ही लंबे-लंबे अकालों के दौरान हमारे पूर्वजों की जिंदगियां बचाईं हैं.. और ये अब भी हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा हैं।

आंचल : बाबा, पुराने वक्त में तो राजस्थान के लोगों ने पानी की किल्लत से जूझना सीख लिया था। लेकिन आजकल तो लगता है कि पानी बचाने की किसी को भी फिक्र नहीं है।

बंशीधर : ऐसा नहीं है बेटी। क्या तुमने राजेंद्र सिंह का नाम नहीं सुना।

सुमित : कौन... वो ही ना.. जिन्हें जलपुरुष भी कहते हैं।

बंशीधर : हां बेटे। उन्होंने राजस्थान के सूखे इलाकों में पानी पहुंचने के लिए छोटे तालाबों यानी जोहड़ों में बारिश के पानी को जमा करने का काम किया। अपने साथियों की मदद से राजेंद्र सिंह ने हजारों गावों में जोहड़ बनाए। इनमें तो कई गांव ऐसे थे जो पानी ना होने की वजह से वीरान हो चुके थे। और उसी का नतीजा रहा कि जिन इलाकों में लोग खेती की उम्मीद छोड़ चुके थे, वहां भी फसलें लहलहाने लगीं।

आंचल : ये तो बहुत शानदार बात है।

बंशीधर : और खास बात ये कि राजेंद्र सिंह से पानी को सहेजने के लिए उन्हीं उपायों को अपनाया जिनको हमारे पूर्वज सैकड़ों वर्षों पहले भी इस्तेमाल करते थे। बस, तेज जीवन की आपाधापी में लोगों ने इसपर ध्यान देना बंद कर दिया था।

सुमित : इससे तो कई सारे गांवों को फायदा पहुंचा होगा ?

बंशीधर : हां—हां, क्यों नहीं। इससे खेती के लिए तो पानी मिला ही, धरती के जलस्तर में सुधार हुआ और उसका असर दूसरे जल स्रोतों में भी देखने को मिला। आपको मैं बताऊं, समूचे राजस्थान में और भी कई संस्थाएं... और तमाम लोग पानी बचाने की मुहिम से जुड़े हुए हैं।

आंचल : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद बाबा। आपने हमें इतना कुछ बताया।

सुमित : हां बाबा, दरअसल हमें तो पूरे राजस्थान के लोगों से ही काफी कुछ सीखने की जरूरत हैं जिन्होंने कम पानी के बावूजद यहां की जिंदगी को खुशहाल बनाने की कवायद जारी रखी है। अभी हम लोग चलते हैं बाबा। कुछ दूसरे स्टॉल भी देख लेते हैं। नमस्ते।

बंशीधर : ठीक है बच्चो... खुश रहो।

(राजस्थानी लोकधुन ... धीरे मंद पड़ती हुई / जल महोत्सव की मिलीजुली आवाजें)

आंचल : भैया... अभी तो हमने सिर्फ एक राज्य का स्टॉल ही देखा है और इतना सारा वक्त गुजर गया।

सुमित : वो देखो आंचल... सामने ... प्रोफेसर इरफान अंकल... वो हमारी ओर ही आ रहे हैं।

(पदचाप करीब आती हुई)

सुमित व आंचल : नमस्ते अंकल...।

इरफान : कैसे हो बच्चो, कैसा लग रहा है जल महोत्सव।

आंचल : काफी अच्छा है अंकल।

इरफान : चलो, मैं भी आपके साथ ही चलता हूं।

आंचल : ये तो बहुत अच्छा है अंकल। कितने सारे स्टॉल हैं यहां।

सुमित : हां आंचल। देखो उस ओर... वहां से कितना सुंदर संगीत सुनाई दे रहा है।

आंचल : हां... हां चलो। वहीं चलते हैं।

(दोनों के चलने की आवाज / उत्तराखंड की लोकधुन / धीरे-धीरे करीब आती हुई)

सुमित : अच्छा.. ये तो उत्तराखंड का स्टॉल है। वो देखो हिमालय से निकलती हुई गंगा और यमुना की कितनी सुंदर झांकी बनाई है।

आंचल : इस राज्य में तो इतना सारा पानी है। वहां भला पानी के संरक्षण की क्या जरूरत होती होगी।

सुमित : चलो उन्हीं से पूछ लेते हैं। वो देखो, वहां पर एक महिला बैठी हुई हैं... गगरी लिए हुए।

(दोनों के चलने की आवाज़)

आंचल : नमस्ते आंटी। मैं हूं आंचल और ये हैं मेरे भैया सुमित। हम लोग आपसे उत्तराखंड के जलस्रोतों के बारे में समझना चाहते हैं।

गोदावरी : क्या बताऊं बेटी वहां से पानी के बारे में। वहां तो बड़ी किल्लत होने लगी है पानी की।

आंचल : क्या कहा, पानी की किल्लत होने लगी है ?

गोदावरी : हां बेटी, वो तो पुरानी बात हो गई जब पहाड़ों के नौले-धारे पानी से भरपूर रहते थे। अब तो पानी के लिए वहां भी बहुत मारामारी होती है।

सुमित : ये नौले और धारे क्या हैं।

इरफान : मैं बताता हूं तुम्हें। दरअसल पहाड़ों की साठ प्रतिशत से भी ज्यादा आबादी पानी के लिए अब भी इन्हीं नौलों और धारों पर आश्रित है। पहाड़ों में चट्टानों से निकलने वाली पानी की छोटी-छोटी जलधाराएं ही धारे कहलाती हैं।

आंचल : और नौले ?

इरफान : देखो किसी चट्टान से धीरे-धीरे रिसते हुए पानी को वहां के लोगों ने एक छोटे से कुंड में जमा करना शुरू किया। तीन-चार फिट गहराई वाले इस कुंड को दीवारों और छत से सुरक्षित कर दिया जाता है। इसी को नौला कहते हैं। मध्य हिमालयी क्षेत्र में अब भी हजारों नौले मौजूद हैं।

सुमित : तो फिर वहां पानी की दिक्कत कैसे हो गई ?

गोदावरी : बेटे, जब वहां जंगल ही खत्म होने लगे तो फिर पानी कहां से आएगा। आखिर जंगलों से ही तो हमें पानी मिलता था। आबादी बढ़ने लगी और जंगल खत्म होने लगे.. ऐसे में पानी की किल्लत तो होगी ही ना ?

इरफान : बिल्कुल सही कह रही हैं ये। पुराने दौर में पहाड़ी क्षेत्रों में जंगल भी काफी थे और आबादी कम थी। इन जंगलों की बदौलत धरती में पानी रिचार्ज होता रहता था.. यानी जितना पानी उपयोग हुआ.. उतना फिर से सतह के अंदर पहुंचता रहता था।

आंचल : लेकिन बाद में ऐसा क्या हो गया ?

इरफान : धीरे-धीरे जंगल खत्म होने लगे। बारिश का पानी सतह पर रुकने की बजाय बहकर निचले इलाकों में पहुंचने लगा। इसका नतीजा ये हुआ कि जमीन के अंदर पानी की सतह गिरती रही और किल्लत बढ़ती चली गई।

गोदावरी : सही कह रहे हैं भाईसाहब। करीब दस साल पहले हमारे गांव के नौले भी सूख गये थे। बाद में सभी गांव वालों ने मिलकर ऊंचाई वाले इलाकों में बांज और बुरांश के पेड़ लगाए। उन पेड़ों की बदौलत ही आज हमारे नौलों में फिर से पानी आने लगा है।

इरफान : हां आंचल, बांज, बुरांश और उदीस ऐसे पेड़ हैं जो पर्वतीय जलवायु में उगते हैं और धरती के जलस्तर को कायम रखने में उनका बड़ा योगदान रहता है।

सुमित : इसका मतलब तो ये हुआ कि चाहे रेगिस्तान का इलाका हो या फिर हमारा ये हिमालयी क्षेत्र.... अगर हम कुदरत के साथ मिलजुलकर नहीं चलेंगे तो उसके नतीजे तो हमें भुगतने ही पड़ेंगे।

गोदावरी : बेटे, हमें ही नहीं, बल्कि हमारी कई पीढ़ियों को हमारी गल्तियों की सजा भुगतनी होगी।

इरफान : सही बात है, अब आप चाहे हिमालयी क्षेत्रों के जल स्रोतों को ले लीजिए या फिर पश्चिमी राजस्थान की बावड़ियों को। हमारे पूर्वजों ने पानी की अहमियत को समझते हुए उसे स्रोतों के संरक्षण पर खासा ध्यान दिया। और हमें भी इस दिशा में बहुत कुछ करने की जरूरत है।

आंचल : अब हम कोई बावड़ी तो बना नहीं सकते हैं ना ?

इरफान : बावड़ी ना सही, अपने स्तर पर पानी की बचत तो कर ही सकते हैं। बस, फालतू में पानी ना बहने दें, पानी का उतना ही इस्तेमाल करें जितना जरूरी है। कहीं नलों से रिसाव हो रहा हो तो उसे ठीक करने में पहले करें।

सुमित : मैंने देखा है कई लोग पाइप लगाकर अपनी कारें धोते हैं, इसके लिए अगर गीले कपड़े और मग का इस्तेमाल करें तो इससे भी काफी पानी बच सकता है।

इरफान : हां, बिल्कुल ऐसे ही और भी छोटी-छोटी बातें हैं जो भविष्य में पानी की किल्लत से बचा सकती हैं। आजकल तो गांवों में खेतों में सिंचाई के दौरान भी एक अजीब का रवैया देखने को मिलता है।

आंचल : कैसा रवैया।

इरफान : दरअसल, जिसके भी खेत में ट्यूबवेल लगा होता है वो ऐसे बेतरतीब तरीके से उसका इस्तेमाल करता है मानो ये उसकी निजी संपत्ति है। शायद वो ये भूल जाता है कि मशीन और बिजली का खर्चा भले ही वो उठा रहा है लेकिन धरती के अंदर का पानी तो सभी का है। उस पानी पर किसी एक का अधिकार नहीं।

गोदावरी : सही बात है, जब अधिकार ही नहीं तो फिर उस पानी को फिजूल में बहाने का तो कोई तुक ही नहीं बनता। अब आप हमारे जंगलों को ही ले लीजिए। इमारती लकड़ी के लिए जंगलों का बेहिसाब कटान कर लिया जाता है और इसके एवज में हमे पीने के पानी के लिए भी तरसना पड़ता है।

सुमित : आंटी अभी हम लोग चलते हैं। काफी अच्छा लगा आपसे बात करके।

गोदावरी : ठीक है बेटा...।

(पहाड़ी लोकधुन धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई / कदमों की आवाज़)

इरफान : देखो बच्चो, हालात भले ही चिंताजनक हों लेकिन जल स्रोतों को सहेजने की कोशिश हमने खुद ही शुरू करनी होगी। सबसे पहले अपने आप से, फिर अपने परिवार से और फिर समाज से।

आंचल : सही कहा आपने। हम तो ऐसा कतई नहीं चाहते कि अब कोई विश्वयुद्ध हो और पानी उसकी वजह बने।

सुमित : अंकल मुझे तो अब प्यास भी लगने लगी है, कहीं से एक गिलास पानी मिल जाता तो अच्छा रहता।

आंचल : प्यास तो मुझे भी लगी है भैया।

इरफान : **(हल्की हंसी के साथ)** ठीक है—ठीक है... आंचल अब कहीं तुम पानी के लिए ही अपने भाई से युद्ध करना शुरू मत कर देना।

(तीनों की हंसी... धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई)

----------CLOSING MUSIC----------